



THE
MENTORING
PROJECT

यौन आकर्षण: समलैंगिक इच्छाओं पर एक मसीही दृष्टिकोण



JACOB HARGRAVE

यौन आकर्षण: समलैंगिक
इच्छाओं पर एक मसीही
दृष्टिकोण



JACOB HARGRAVE

(जैकॉब हार्ग्रेव)

विषय-सूची

परिचय	4
सत्र I: मैं कौन हूँ?	5
सत्र II: पाप और परीक्षा	11
सत्र III: अंगीकार और मन फिराव	15
सत्र IV: पवित्रीकरण	21
सत्र V: स्थानीय कलीसिया में समुदाय	25



परिचय

कई मसीहियों के लिए समान लिंग के प्रति आकर्षण के मुद्दे पर बातचीत इसी बात से शुरू और खत्म हो जाती है कि बाइबल सभी प्रकार की समलैंगिक गतिविधियों के विरोध में स्पष्ट चेतावनी देती है। फिर भी यह बात अक्सर एक गहरे प्रश्न का उत्तर दिए बिना छोड़ देती है: क्या समलैंगिक इच्छाओं का अनुभव करने वाले मसीहियों के लिए पवित्रशास्त्र में कुछ दिया गया है? अगर आप समलैंगिक आकर्षण से संघर्ष कर रहे हैं, तो क्या आपको उन आकर्षणों से अकेले जूझने के लिए छोड़ दिया गया है, जिनकी जड़ गहराई तक जुड़ी हुई लगती है, शायद जिस तरह से आप पैदा हुए थे? क्या आप किसी तरह अलग हैं, या मसीह के बाकी लोगों से 'अलग' हैं?

इस जीवन कौशल मार्गदर्शिका का उद्देश्य यह दिखाना है कि बाइबल इन प्रश्नों के बारे में जितना लोग सोचते हैं, उससे कहीं अधिक गहराई से बात करती है। पवित्रशास्त्र में उस मसीही के प्रतिदिन के जीवन के बारे में बहुत कुछ कहा गया है, जो समलैंगिक इच्छाओं का अनुभव करता है। ऐसा इसलिए नहीं है, क्योंकि यह संघर्ष बिल्कुल अलग है, बल्कि इसलिए है, क्योंकि यह पूरी तरह से मानवीय परिस्थिति के भीतर ही आता है। आप अन्य मसीहियों से अलग, असामान्य रूप से टूटे हुए या मौलिक रूप से अलग नहीं हैं। आप, हर एक मसीही जन के समान ही, एक पतित मनुष्य हैं, जिसे अनुग्रह, क्षमा और परिवर्तन की आवश्यकता है।

इस पुस्तिका का लक्ष्य यह है कि यह एक मसीही के जीवन में समलैंगिक आकर्षण से कैसे निपटा जाए, इस बारे में बाइबल के अनुसार सोचने के लिए एक व्यावहारिक मार्गदर्शक के रूप में काम करे। हम पहचान, पाप, प्रलोभन, अंगीकार, मन फिराव और पवित्रीकरण की मूलभूत श्रेणियों को देखेंगे। जैसे-जैसे हम इसमें आगे बढ़ेंगे, हम इस बात पर विचार करेंगे कि हमारे संघर्ष में परमेश्वर किस तरह हमसे अनुग्रह के साथ मिलता है, वास्तविक परिवर्तन कैसे संभव है, और समय के साथ पवित्रता में वृद्धि कैसे संभव है। अंत में, हम इन सत्यों को उस समुदाय पर विचार करके एक साथ लाएँगे, जिसे परमेश्वर ने उन्हें जीवित रहने के लिए उपहार में दिया है: अर्थात् स्थानीय कलीसिया।

1

मैं कौन हूँ?

“मैं कौन हूँ?” यह हमारे आज के समय का सवाल है। पहचान का विषय पूरे संसार पर छाया हुआ है, चाहे वह आर्टीफीशियल इन्टेलीजेन्स अर्थात् कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर बहस कि बात हो या नस्ल एवं जातीयता पर बातचीत हो या फिर जीवन के बाद की अनंतता के सिद्धांतों का विषय हो।

संसार आपको क्या बता रहा है

पश्चिमी जगत का संदेश है कि व्यक्तिगत पहचान को भीतर से परिभाषित किया जाता है। स्वयं की खोज के लिए, आप अपने मन के भीतर की ओर देखते हैं। व्यक्तिगत अस्तित्व का शिखर अपने ‘सच्चे स्व’ के रूप में जीना है। बस ‘जैसे आप हैं, वैसे ही बनें’। यह कामुकता और यौन आकर्षण की चर्चाओं में सबसे अधिक स्पष्ट है, जहाँ एक व्यक्ति द्वारा अनुभव की जाने वाली यौन इच्छाओं के प्रकार को उनकी पहचान के एक मुख्य घटक के रूप में देखा जाता है।

यौन इच्छा को व्यक्तिगत पहचान के बराबर मानने की धारणा एक नई खोज है। इसे सिगमंड फ्रायड ने लोकप्रिय बनाया था, जिन्होंने तर्क दिया था कि यदि मनुष्य का वांछित लक्ष्य आनंद के सिद्धांत के माध्यम खुशी प्राप्त करना है, और यदि यौन प्रेम मनुष्यों को आनंद और संतुष्टि का सबसे बड़ा अनुभव प्रदान करता है, तो यौन संतुष्टि एक व्यक्ति होने का अर्थ होनी चाहिए। 1950 के दशक में जॉन्स हॉपकिन्स विश्वविद्यालय में मनोवैज्ञानिक और ‘यौन विशेषज्ञ’ जॉन मनी ने फ्रायड को यह तर्क देने के लिए प्रेरित किया कि यौन वरीयता को समान लिंग आकर्षण विकार के बजाय एक अनुस्थिति के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए। इसे आगे यह दावा करने के लिए विकसित किया गया था कि यौन अनुस्थिति जन्मजात और निश्चित दोनों ही हैं।

समलैंगिक आकर्षण का कारण क्या है, आज इस पर कई सिद्धांत इस विचार पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं, कभी-कभी इसे आनुवंशिक यौन आकर्षण या जैविक निर्धारणवाद के रूप में दिखाया जाता है। यौन इच्छाओं को हम कौन हैं, इसके एक मूल घटक के रूप में देखा जाता है, जो हमारी पहचान के लिए आवश्यक है। इसके परिणामस्वरूप, लैंगिकता के मुद्दों पर असहमत होना किसी से इस बात से इनकार करने के लिए कहने के समान है कि वे वास्तव में कौन हैं।

समस्या यह है कि पहचान का यह आधुनिक दृष्टिकोण मौलिक रूप से अस्थिर है। यह परिभाषित करना कि आप कौन हैं, चाहे आपके भीतर की, अपनी समझ से हो, या दूसरों की बातों से, कोई ठोस आधार नहीं देता है। भावनाएँ और स्वयं के बारे में विचार बदलते रहते हैं। सांस्कृतिक दृष्टिकोण और धारणाएँ बदलते रहते हैं। हम कौन हैं, हमारी मौलिक पहचान के लिए कुछ ऐसा होना चाहिए, जो ना बदले। हम पूरे जीवन में कई बदलावों के माध्यम से भी एक निश्चित व्यक्ति बने रहते हैं। यही वह जगह है, जहाँ बाइबल आती है। जब हम पवित्रशास्त्र की ओर मुड़ते हैं, तो हम देखते हैं कि हम कौन हैं, यह परमेश्वर की भली मनसा और इच्छा में निहित है।

बाइबल आपको क्या बताती है

पवित्रशास्त्र सिखाता है कि आप परमेश्वर के द्वारा बनाए गए थे, और फिर भी, पाप के कारण, आप टूटे हुए हैं। हालाँकि, यदि आप एक मसीही हैं, तो आपको इस टूटेपन की अवस्था से छुड़ा लिया गया है।

आप रचे गए हैं

पवित्रशास्त्र के आरंभ में ही परमेश्वर ने अपने शब्दों के द्वारा सब वस्तुओं की सृष्टि की, और उन्हें 'अच्छा' कहा (उत्प. 1:10, 12, 18, 21, 25)। सृष्टि का समापन परमेश्वर के इस विचार-विमर्श के साथ होता है, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएँ' (उत्प. 1:26)। हम दोनों ही प्रकार के हैं, बाकी की सृष्टि के सामान जिन्हें परमेश्वर ने रचा और संभाला हुआ है, और फिर भी हम बाकी की सृष्टि से अलग हैं। हमें परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। यह स्वरूप हमारे एक विशेष भाग में दूसरे कि तुलना में अधिक नहीं पाया जाता है। बल्कि, हमारा पूर्ण व्यक्तित्व लिए परमेश्वर का स्वरूप है। परमेश्वर का स्वरूप मानवीय स्वभाव के लिए आवश्यक है। और परमेश्वर हमारी संरचना को 'बहुत ही अच्छा' कहता है। परमेश्वर के स्वरूप में होना हर व्यक्ति को अंतर्निहित सम्मान और मूल्य देता है, क्योंकि हम स्वयं परमेश्वर को प्रतिबिंबित करते हैं।

यह सम्मान और मूल्य इस बात में दिखाई देता है कि परमेश्वर ने व्यक्तिगत रूप से मनुष्यों कि रचना की। जैसे परमेश्वर ने आदम में जीवन का श्वास फूँका (उत्प. 2:7) वैसे ही परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसकी माँ के गर्भ में बनाता है। हम 'भयानक और अद्भुत रीति से रचे गए हैं', क्योंकि परमेश्वर हमें बुनता है और हमें जीवन देता है (भजन. 139:13-14) जीवन एक उपहार है, जो हमें मिलता है। परमेश्वर के स्वरूप में होना भी एक उपहार है, एक पहचान जो हमें दी गई है। हम इसे नहीं चुनते हैं; हम इसके रूप में बनाए गए हैं।

मनुष्य, जैसा कि मूल रूप से बनाया गया था, अपने स्वभाव में धर्मी और पवित्र था। यह नैतिक पूर्णता मानवीय स्वभाव के लिए ही आवश्यक थी। इससे कम कुछ भी परमेश्वर की रचना में एक दोष का संकेत देगा। मनुष्य को परमेश्वर के संबंध में बनाया गया था और वह उसे स्वीकार करने, प्रेम करने और उसकी आराधना करने में

सक्षम था। आरंभ से ही, परमेश्वर व्यक्तिगत रूप से मानव जाति के साथ जुड़ा हुआ है (उत्प. 1:28-30; 2:15-18) हम व्यक्तिगत रूप से एक व्यक्तिगत परमेश्वर के द्वारा जाने जाते हैं और वह हमसे इस आधार पर जुड़ता है कि उसने हमें कैसे बनाया है।

आरंभ से ही, परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में नर और नारी के रूप में बनाया (उत्प. 1:27)। लैंगिक अंतर एक बनाई हुई, परमेश्वर के द्वारा दी हुई सच्चाई है। यह अंतर इस बात की बुनियाद है कि हम स्वरूप-धारक के तौर पर कौन हैं। जबकि हर एक व्यक्ति पूरी तरह से परमेश्वर का स्वरूप है, हम सब मिलकर और अधिक पूर्ण रूप से परमेश्वर का स्वरूप दिखाते हैं। मानव जाति परमेश्वर को एक अकेले के बजाय दो, एक-दूसरे पर निर्भर लिंगों के रूप में ज़्यादा अच्छी तरह से प्रकट करती है। अलग-अलग लिंग एक-दूसरे के पूरक हैं। हमें एक-दूसरे की ज़रूरत है।

लिंगों को एक-दूसरे की आवश्यकता के सबसे स्पष्ट तरीकों में से एक प्रजनन का कार्य है। परमेश्वर ने उद्देश्य के साथ एक उपहार के रूप में यौन संबंध की रचना की है। यौन संबंध के लिए पहला उद्देश्य जिसे हम बाइबल में देखते हैं, वह 'फलो-फूलो' (उत्प. 1:28) से है। मानवीय लैंगिकता को प्रजनन की ओर निर्देशित किया जाता है। इस तरह परमेश्वर ने मनुष्यों को 'पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो' की इच्छा की (उत्प. 1:28), जिसके द्वारा वे परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करते हुए उसके अधीन रहकर शासन करते हैं। यौन संबंध के लिए दूसरा उद्देश्य जिसे हम बाइबल में देखते हैं, वह विवाह के भीतर 'एक ही तन' बनाना है (उत्प. 2:24)। मानवीय लैंगिकता को दो को एक के रूप में एक होने के लिए आदेश दिया गया है। यौन संबंध इस एकता की परिकल्पना और निर्माण करता है। इस पारस्परिक, स्वयं को दे देने वाले कार्य के माध्यम से, एक पति और पत्नी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और आत्मिक रूप से एक साथ बंधे हुए होते हैं। पूरी बाइबल में, यौन संबंध विवाह की सीमाओं के भीतर एक पुरुष और एक महिला का एक-तन का मिलन है। यह ढांचा बाइबल में समलैंगिक आकर्षण को समझने के लिए महत्वपूर्ण है—न केवल वर्जित बातों के एक समूह के रूप में, बल्कि इस सकारात्मक, निर्मित व्यवस्था से भटक जाने के रूप में।

आप टूटे हुए हैं

जबकि सृष्टि मूल रूप से अच्छी थी, पाप के जगत में आने से यह पतित और दूषित हो गई। पतन ने पूरी सृष्टि को प्रभावित किया। मानवीय स्वभाव को बहुत नुकसान पहुँचा था। न केवल धार्मिकता खो गई, बल्कि मनुष्य आत्मिक रूप से मर गया (रोम. 6:23; इफि. 2:1)। हमारी पतित अवस्था में, हम स्वाभाविक रूप से बुराई की ओर झुकाव रखते हैं। हम सभी परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह में पैदा हुए हैं, उसके शलुओं के रूप में (रोम. 5:10)। हम 'क्रोध की सन्तान' हैं (इफि. 2:3)। पुरे पवित्रशास्त्र में, हम देखते हैं कि कोई 'बीच का' मानवीय स्वभाव नहीं है—मनुष्य या तो पवित्र है या पतित है, नया जन्म पाया हुआ है या पाप में मरा हुआ है (मत्ती 6:24,

7:13-14, 12:30; रोम. 3:23)। इसका मतलब यह है कि कुछ 'स्वाभाविक' प्रतीत होने का मतलब जरूरी नहीं कि वह 'अच्छा' हो।

लिंगों के बीच संबंध भी पतन से प्रभावित हुए थे। परमेश्वर की इच्छा के विपरीत चीजों की लालसा, जो फल के लिए हव्वा की पापी लालसा के साथ शुरू हुई (उत्प. 3:6), यौन संबंधों तक फैली हुई है। विवाह में बंधे एक पुरुष और एक स्त्री के बीच यौन संबंध के लिए परमेश्वर की आदर्श योजना भ्रष्ट हो गई थी। यौन पूरकता बिगड़ गई और बुरे व्यवहार के आधीन आ गई, स्त्री की लालसा उसके पति के लिए होती है और वह उस पर प्रभुता करता है (उत्प. 3:16)। विवाह की वाचा को कई पत्नियों को शामिल करने के लिए बदल दिया गया है (उत्प. 4:19)। और, उत्पत्ति 19 तक, यौन अनैतिकता व्यापक है और यौन संबंध अपनी मूल योजना और इच्छा से तेजी से विकृत हो रहा है। लालसाएँ विकृत हो गई हैं, क्योंकि लोग सृष्टिकर्ता के बजाय सृष्टि का पीछा करते हैं और उसकी आराधना करते हैं (रोम. 1:25)।

अव्यवस्थित लैंगिकता—यानी, परमेश्वर की अच्छी योजना के विपरीत यौन संबंध की इच्छा—पतन का परिणाम है। यह इस कठिन प्रश्न का उत्तर देने में मदद करता है कि पवित्रशास्त्रीय दृष्टिकोण से समलैंगिक आकर्षण का कारण क्या है। परमेश्वर ने मानवीय स्वभाव को अच्छा बनाया है, लेकिन हमारी लालसाओं की विशेष विकृतियाँ पाप की उपज हैं। जब परमेश्वर हमें बनाता है, तो वह हमें आदम में बनाता है, न कि एक खाली तस्ती के रूप में। एक बार जब आदम में मानवता गिर गई, तो उसके बाद के सभी मनुष्य उसकी पतित अवस्था में पैदा होते हैं। आपको बनाने वाला परमेश्वर आपको पापी बनाने का नया निर्णय नहीं ले रहा है। बल्कि, वह आपको पहले से ही पतित मानव जाति में एक भागीदार के रूप में बना रहा है।

इसलिए, यह तर्क देना कि हमारी अव्यवस्थित लैंगिकता परमेश्वर द्वारा दी गई है और इस प्रकार स्वाभाविक रूप से अच्छी है, यह तर्क देने के समान है कि हमारे पापमय स्वभाव का कोई भी अन्य हिस्सा अच्छा है। हम कभी भी अपने क्रोधी स्वभाव, या झूठ बोलने वाले स्वभाव, या व्यभिचारी स्वभाव के बारे में ऐसा दावा नहीं करेंगे। हमें उन लोगों को मसीही के रूप देखने की उम्मीद करनी चाहिए, जो में समलैंगिक आकर्षण के साथ संघर्ष कर रहे हैं, जो पतन के कई प्रभावों में से एक का सामना करना है। महत्वपूर्ण बात यह है कि वे इस पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। हमारी पतित लैंगिकता, हमारे पतित स्वभाव के हर अन्य पहलू की तरह, उद्धार और पवित्रीकरण के माध्यम से उसके अनुग्रह को दिखाने के लिए परमेश्वर के प्रबंध के अधीन मौजूद है। हममें से प्रत्येक के माध्यम से, परमेश्वर अपनी महिमा प्रदर्शित करता है, जब वह पापियों को बचाता है और उन्हें अपने आत्मा की सामर्थ्य से बदलता है।

आप छुड़ाए गए हैं

और इसलिए हम बिना आशा के नहीं हैं। यह समलैंगिक आकर्षण सुसमाचार विषयों का मूल है: यदि आप अपने पाप से मुड़ गए हैं और यीशु मसीह के क्रूस पर समाप्त कार्य में अपना विश्वास रखते हैं, तो आपको नया बना दिया गया है। सुसमाचार के माध्यम से, आपको क्षमा कर दिया गया है और परमेश्वर के साथ आपका मेल-मिलाप हो गया है। क्रोध की सन्तान परमेश्वर की सन्तान बनती हैं (रोम. 8:16; 1 पत. 1:14, 1 यूह. 3:1-2)। आपको एक नया स्वभाव दिया गया है, जिसे आत्मिक रूप से जीवित किया गया है (तीतु. 3:5; इफि. 2:5)। ज्ञान, धार्मिकता और पवित्रता मसीह में सहभागिता के द्वारा पुनः प्राप्त की जाती है (इफि. 4:24; कुलु. 3:10)। और इसलिए, हमें पुराने मनुष्यत्व को उतार फेंकने के लिए (इफि. 4:22; रोम. 6:6) और नए मनुष्यत्व को पहन लेने के लिए बुलाया गया है (इफि. 4:24; 2 कुरिं. 5:17)। हमें अपने मन के नए हो जाने से परिवर्तित होना है, ताकि और अधिक मसीह के समान होते चले जाएँ (रोम. 12:2; इफि. 4:23)। हमारी पहचान उसमें निहित है, जो मसीह ने किया है। हम मसीह में हैं, परमेश्वर के अनुग्रह से सुरक्षित हैं।

हालाँकि पाप विश्वासी में रहता है, फिर भी परमेश्वर मसीह के कारण अपने अनुग्रह से उसे क्षमा कर देता है। पाप की उपस्थिति बनी रहती है, लेकिन पाप की शक्ति टूट जाती है। हम अब पाप के गुलाम नहीं हैं, बल्कि इससे मुक्त हो गए हैं (रोम. 6:6-7) पुराने स्वभाव की पापी इच्छाओं और मसीह में नए स्वभाव के बीच संघर्ष जारी है। मसीहियों को पाप से लड़ने और उसे मारने के जीवन के लिए बुलाया गया है (जिसे 'पाप को खत्म करना' कहते हैं) लेकिन वास्तविक स्वतंत्रता है।

यदि आप अपने जीवन में समलैंगिक इच्छाओं का अनुभव करते हैं, तो आप कौन हैं, इसके बारे में बाइबल की शिक्षा बहुत ही ज्यादा आशाजनक है। यह आपके अनुभव को एक वैभवशाली कहानी के भीतर रखकर समलैंगिक आकर्षण के लिए वास्तविक मसीही मार्गदर्शन प्रदान करता है, जो आपकी इच्छाओं और आकर्षणों से कहीं अधिक है। आप अपनी इच्छाओं से परिभाषित नहीं होते हैं, न ही आप असामान्य रूप से टूटे हुए हैं। हर दूसरे व्यक्ति की तरह, आपको व्यक्तिगत रूप से सम्मान, मूल्य और उद्देश्य के साथ एक स्वरूप-धारक के रूप में बनाया गया है। साथ ही, आप बाकी सभी की तरह पाप के कारण टूटे हुए हैं और आपको छुटकारे की आवश्यकता है। हमारा दिल स्वाभाविक रूप से परमेश्वर से दूर होते हुए पाप की ओर झुकता है। समलैंगिक इच्छाएँ आपको मानव कहानी से बाहर नहीं रखती हैं; वे हमारे साझा टूटेपन और एक उद्धारकर्ता की हमारी आवश्यकता की वास्तविकता को दर्शाती हैं।

यौन संबंध के लिए परमेश्वर की योजना और मनसा को समझने से हमें समलैंगिकता के खिलाफ परमेश्वर के प्रतिबंधों को समझने में मदद मिलती है। पवित्रशास्त्र की शिक्षा लगातार यह है कि यौन अंतरंगता विवाह के

भीतर एक पुरुष और एक स्त्री के एक-तन के मिलन के लिए आरक्षित है, और एक ही लिंग के दो लोगों के बीच यौन गतिविधि उस योजना से बाहर आती है और इसलिए पाप है।

अद्भुत खबर यह है कि अपनी महान दया में होकर, परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारे पापों के लिए मरने और हमें परमेश्वर के साथ मिलाने के लिए भेजा। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से, उन सभी को क्षमा की पेशकश की जाती है, जो मन फिराते हैं और विश्वास करते हैं। यदि आप एक मसीही हैं, तो आपको एक नया स्वभाव और नई इच्छाएँ दी गई हैं। मसीह में आपकी एक नई पहचान है। जबकि हो सकता है कि पुरानी इच्छाएँ अभी भी हों, वे अब आपको परिभाषित नहीं करती हैं या आप पर शासन नहीं करती हैं। आत्मा द्वारा सशक्त होकर, आप और मैं पाप से भागने और धार्मिकता और पवित्रता में बढ़ने में सक्षम हैं। यह सीखने का मार्ग है कि समलैंगिक आकर्षण को कैसे दूर किया जाए—अपनी सामर्थ्य से नहीं, बल्कि जीवन की नवीनता में चलकर।

विचारशील प्रश्न:

1. संसार का संदेश कि पहचान की खोज अंदर की ओर देखने से होती है, बाइबल की इस शिक्षा से कैसे अलग है कि पहचान परमेश्वर से प्राप्त होती है?
2. परमेश्वर के स्वरूप में बनाए जाने से आपकी स्वयं के प्रति समझ कैसे प्रभावित होनी चाहिए? यह दूसरों के प्रति आपके दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करनी चाहिए, जिसमें वे लोग भी शामिल हैं, जो समलैंगिक आकर्षण या आपसे अलग पापों और इच्छाओं से जूझ रहे हैं?
3. पतन की वास्तविकता इस बात को कैसे प्रभावित करती है कि हम अपनी इच्छाओं को कैसे समझते हैं, भले ही वे 'स्वाभाविक' लगें?
4. मसीह में एक नए स्वभाव के साथ छुड़ा लिया जाना हमारी स्वयं के प्रति समझ को कैसे पुनर्परिभाषित करता है?
5. पुनरुत्थान में पाप से पूरी तरह स्वतंत्र होने की नई सृष्टि की प्रतिज्ञा, वर्तमान संघर्षों को सहने के आपके तरीके को कैसे आकार देती है? यह मसीही विश्वास और समलैंगिक आकर्षण के लिए एक महत्वपूर्ण प्रश्न है।

2

पाप और परीक्षा

हम पहले ही पाप का उल्लेख कर चुके हैं, लेकिन यह वास्तव में क्या है? हमारे आस-पास के संसार के लिए, यह शब्द पुरातन, यहाँ तक कि दबाने वाला भी लगता है। यह सार्वजनिक चर्चाओं में शामिल नहीं होता है। क्योंकि यह अवधारणा आज कितनी अलग-थलग महसूस होती है, इसलिए यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि हम किस बारे में बात कर रहे हैं।

पाप क्या है?

सीधे शब्दों में कहें तो पाप परमेश्वर की व्यवस्था के अनुरूप होने में कोई भी चूक है। परमेश्वर पूरी तरह से पवित्र और पूरी तरह से भला है (यशा. 6:3; प्रका. 4:8; लैव्य. 19:2; 1 यूह. 1:5) वह भलाई का स्रोत और मानक है, और वह अपनी व्यवस्था के माध्यम से इस मानक को स्पष्ट करता है। परमेश्वर हमसे पवित्र होने की माँग करता है, क्योंकि वह पवित्र है (1 पत. 1:14-16) जो कुछ भी परमेश्वर के स्तर से कम है वह अपूर्ण और अपवित्र है—यही पाप है। 1 यूहन्ना 3:4 में स्पष्ट कहा गया है, “पाप तो व्यवस्था का विरोध है।” पाप, इसलिए, प्रभु की आज्ञाओं के विपरीत किया गया कुछ भी शामिल है, चाहे जानबूझकर या अनजाने में (लैव्य. 5:15, 17-19)।

पाप केवल परमेश्वर के विरोध में स्पष्ट कार्यों से अधिक है। यह कुछ भी है, जिसे हम पूर्ववत् छोड़ देते हैं, जो परमेश्वर की व्यवस्था हमें करने के लिए कहता है (याकू. 4:17)। इन सब में, हम देखते हैं कि यह परमेश्वर है, जो तय करता है कि पाप क्या है, हम नहीं।

पतन के समय, मानवता ने उस धार्मिकता को खो दिया, जिसके साथ हम मूल रूप से बनाए गए थे। इसके साथ-साथ, हम एक भ्रष्ट स्वभाव के साथ आत्मिक रूप से मर गए, जो बुराई की ओर झुका हुआ था। इन दो चीजों में वह शामिल है, जिसे आमतौर पर ‘मूल पाप’ कहा जाता है। मूल पाप, सभी मनुष्यों की एक सार्वभौमिक विशेषता, मूल धार्मिकता का खो जाना और भ्रष्ट स्वभाव है। यह मूल इसलिए नहीं है कि यह मूल रूप से हमारे बनाए गए स्वभाव का हिस्सा था, बल्कि इसलिए कि यह अन्य सभी पापों की शुरुआत और स्रोत है। तो, पहले पाप और मूल पाप के बीच एक अंतर है। पहला मानवीय पाप अदन की वाटिका में आदम और हव्वा के द्वारा आज्ञा तोड़ना था, जिसके द्वारा पाप संसार में प्रवेश किया और मानवीय स्वभाव दूषित हो गया। पवित्रशास्त्र

स्पष्ट रूप से बताता है कि आदम संसार में पाप के आने के लिए ज़िम्मेदार है, क्योंकि वह सम्पूर्ण मानव जाति का एक जनक और शुरुआत है (रोम. 5:12; 1 कुरिं. 15:21, 45)। आदम मानवता के प्रतिनिधि या 'मुखिया' के रूप में खड़ा था। क्योंकि आदम ने परमेश्वर कि व्यवस्था को तोड़ा, हम पाप में पैदा हुए हैं। हम सभी को उसका दोष विरासत में मिलता है (रोम. 5:19)। यह तब अद्वैत रूप से यीशु मसीह के विपरीत है। मसीह ने मानवीय स्वभाव ग्रहण किया और एक नई मानवता का प्रमुख और शुरुआत है—एक चुना हुआ वंश, एक राज-पदधारी याजकों का समाज, एक पवित्र लोग (1 पत. 2:9-10; रोम. 5:15-17; 8:29; 1 कुरिं. 15:22, 45; 2 कुरिं. 5:17; इफि. 2:14-16)। यीशु प्रतिनिधि के रूप में खड़ा है और इसलिए वे सभी जो मन फिराते हैं और विश्वास करते हैं, उसकी धार्मिकता के वारिस हैं (यूह. 3:3; रोम. 8:14-17; इफि. 1:5-14)। आदम ने पाप किया और हम सभी को पाप और दंड मिला। मसीह ने छुटकारा दिलाया और जो भी विश्वास करते हैं, उन्हें धार्मिकता और दया मिलती है।

जब हम पाप के बारे में सोचते हैं, तो उस द्वार को भी समझना महत्वपूर्ण है, जिसके माध्यम से पाप अक्सर हमारे जीवन में प्रवेश करता है: परीक्षा। परीक्षा क्या है?

परीक्षा क्या है?

परीक्षा अपने सबसे बुनियादी रूप में पाप के लिए एक आकर्षण है। यह परमेश्वर और उसकी व्यवस्था से दूर और परमेश्वर के बजाय वस्तुओं की ओर झुकाव है। परमेश्वर को बुराई से लुभाया नहीं जा सकता है और वह किसी को भी लुभाता नहीं है (याकू. 1:13)। उसे बुराई का प्रलोभन नहीं दिया जा सकता है, क्योंकि यह उसके पूर्ण स्वभाव के विपरीत होगा। वह किसी को लुभा नहीं सकता, क्योंकि यह उसे दुष्ट बना देगा। इसके बजाय, हमारी परीक्षाएँ या तो भीतर से या बाहर से उत्पन्न होती हैं। बाहर से, एक व्यक्ति या शैतान (याकू. 4:7) आपको पाप करने के लिए लुभाना चाहता है (नीति. 1:10; 7:21; मत्ती 4:1-11; मर. 1:12-13; लूका 4:1-13)। हालाँकि यह निश्चित रूप से आपको लुभाने वाले व्यक्ति का पाप है, लेकिन यह आपके लिए पाप नहीं है, जब तक कि आप प्रलोभन में न आ जाएँ। परीक्षा में गिर जाना एक पापपूर्ण कार्य के माध्यम से हो सकता है, या यह आंतरिक रूप से एक पापपूर्ण इच्छा के माध्यम से हो सकता है।

भीतर से, अव्यवस्थित इच्छाएँ हमारे भ्रष्ट स्वभाव से उत्पन्न होती हैं, जो परमेश्वर की व्यवस्था के विपरीत वस्तुओं की लालसा करती हैं। ये इच्छाएँ हमें बुराई से लुभाती हैं, क्योंकि हम खुद 'अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर' (याकू. 1:13-14) लुभाए जाते हैं। इसका मतलब है कि ये इच्छाएँ पाप (बुराई) और आगे पाप करने का प्रलोभन दोनों हैं। जो इच्छाएँ परमेश्वर के नियम के विपरीत हैं, वे पाप हैं, क्योंकि वे परिभाषा के अनुसार अधर्म, 'परमेश्वर की व्यवस्था के अनुरूप होने में चूक' हैं। इससे हम देखते हैं कि पाप से पाप उत्पन्न

होता है। जिस क्षण से पापी विचारों की कल्पना की जाती है, वे पाप हैं और उनमें पापपूर्ण कार्यों को जन्म देने की क्षमता होती है।

यदि आप कुछ पाप करना चाहते हैं और फिर भी उस पर अमल नहीं करते हैं, तो परमेश्वर की स्तुति करें! आपने एक पापपूर्ण इच्छा को और बढ़ने नहीं दिया, जो और अधिक पाप का कारण बनती है। आपने उस पाप को मार डाला, लेकिन पाप मौजूद था इसलिए इसे मारने की आवश्यकता थी। हमें पापपूर्ण इच्छाओं को परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ने की इच्छा के वास्तविक उदाहरणों के रूप में स्वीकार करना है। हमें मन फिराव में उसकी ओर मुड़ना है, फिर भी जैसा कि हम करते हैं, हमें प्रभु को धन्यवाद देना चाहिए कि उसने हमें अपने आत्मा के माध्यम से प्रतिरोध करने और आगे के पाप से भागने के लिए सशक्त किया है।

मैं स्पष्ट रूप से बताता हूँ, अप्राकृतिक इच्छाएँ पापपूर्ण हैं। इससे अक्सर यह प्रश्न उठता है: परमेश्वर की दृष्टि में और संसार की दृष्टि में यौन आकर्षण क्या है?

अपनी आंतरिक, अव्यवस्थित इच्छाओं को पाप के रूप में समझने से हमें अपने बारे में एक सटीक समझ मिलती है। हम भ्रष्ट पापी हैं, जो पाप के लिए लालसा करते हैं। फिर से जन्म लेने के बाद और हृदय के नया हो जाने के बाद भी, हम शरीर की वासना के साथ जुड़ते रहते हैं। हममें से प्रत्येक कई तरह की अव्यवस्थित (और इसलिए पापी) इच्छाओं के साथ संघर्ष करता है। क्रोध, लालच, यौन अनैतिकता, छल-कपट—हमारे दिल मूर्तियों के छोटे-छोटे कारखाने हैं। यह आश्चर्यजनक है कि हम पाप की कामना कितने तरीकों से कर सकते हैं।

जब हम यौन संबंधों के बारे में सोचते हैं, तो विवाह के भीतर जीवनसाथी के बाहर किसी के साथ यौन संबंध बनाने की कोई भी इच्छा पाप है। यदि आप विवाहित हैं, तो अपने जीवनसाथी के अलावा किसी और के साथ यौन संबंध बनाना पाप है। यदि आप विवाहित नहीं हैं, तो विपरीत लिंग के किसी भी व्यक्ति के साथ यौन संबंध बनाना पाप है, चाहे आप अविवाहित हों या प्रेम-मुलाकात कर रहे हों। समान लिंग के किसी व्यक्ति के साथ यौन संबंध बनाना पाप है। सभी अव्यवस्थित यौन इच्छाएँ पाप हैं। जबकि विपरीत लिंग के लिए यौन इच्छा 'स्वाभाविक' है, क्योंकि यह सृष्टि के निश्चित क्रम को दर्शाती है (यह जरूरी नहीं कि यह हमारे लिए स्वाभाविकता को महसूस करे) समान लिंग के लिए यौन इच्छा स्वाभाविक रूप से 'अप्राकृतिक' है, क्योंकि यह सृष्टि के निश्चित क्रम के विपरीत है। विपरीत लिंग के लिए यौन इच्छा पापपूर्ण होती है, जब यह परमेश्वर की योजना और मनसा से बाहर हो जाती है। एक ही लिंग के लिए यौन इच्छा हमेशा पापपूर्ण होती है, क्योंकि यह हमेशा परमेश्वर की योजना और इच्छा से बाहर होती है।

इसलिए समलैंगिक इच्छा आनुवंशिक यौन आकर्षण के समान 'बाएँ हाथ से काम करने वाला' होने के समान नहीं है या कुछ ऐसा है, जिसके साथ हम पैदा हुए हैं, जिसे अक्सर धर्मनिरपेक्ष मानकों द्वारा एक निश्चित

समलैंगिक आकर्षण विकार के रूप में ठप्पा लगा दिया जाता है। यह एक गलत द्विभाजन है, जो दो अलग-अलग नैतिक श्रेणियों को भ्रमित करता है। समलैंगिक इच्छाएँ स्वाभाविक रूप से परमेश्वर की व्यवस्था के विपरीत हैं और इस प्रकार नैतिक रूप से गलत हैं। बाएँ हाथ से काम करने वाला होना (या यहां तक कि दोनों हाथों से काम करने वाला!) इसका परमेश्वर की व्यवस्था से कोई संबंध नहीं है और इसलिए नैतिक रूप से इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है।

अपनी आंतरिक, अव्यवस्थित इच्छाओं को पाप के रूप में समझने से हमें मसीह और उसके द्वारा प्राप्त स्वतंत्रता पर अपनी आँखें केंद्रित करनी चाहिए। हम अपनी दुष्टता, अपने हृदयों में निरंतर पाप को देखते हैं, और हम वह सब कुछ देखते हैं, जिसके लिए मसीह ने भुगतान किया है। दोष और शर्म के बोझ से दबने के बजाय, हमें मसीह में परमेश्वर के अद्भुत, अथाह अनुग्रह पर आनन्दित होना चाहिए और आश्चर्यचकित होकर आनन्दित होना चाहिए। हमें मसीह में पाए जाने वाले अत्याधिक अनुग्रह और क्षमा में झुकना चाहिए। यह समझना कि आंतरिक परीक्षाएँ पाप हैं, हमें यह देखने में मदद करता है कि हम वास्तव में पापी हैं और यह समलैंगिक आकर्षण के लिए वास्तविक मसीही मार्गदर्शन की नींव प्रदान करता है। फिर भी हम नई सृष्टि हैं। हम अब अपने पापों में मरे हुए नहीं हैं, बल्कि जीवित किए गए हैं और शरीर के खिलाफ लड़ने में सक्षम हैं (रोम. 7:15-20)। यह इस समझ की शुरुआत है कि समलैंगिक आकर्षण को कैसे दूर किया जाए—हमारी अपनी शक्ति से नहीं, बल्कि उसकी सामर्थ्य से।

विचारशील प्रश्न:

1. पाप को “परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार न चलने” (1 यूह. 3:4) के रूप में परिभाषित करना, आपकी अपनी इच्छाओं और कामों के बारे में आम तौर पर सोचने के तरीके को कैसे चुनौती देता है? क्या आपके जीवन में ऐसे क्षेत्त्र हैं, जहाँ आपने इच्छाओं या सोच को ‘प्रभावहीन’ माना होगा, लेकिन पवित्रशास्त्र इसे पाप कहता है?
2. आप अपने जीवन में परीक्षा और पाप के बीच अंतर कैसे करते हैं? क्या आप एक ऐसे समय के बारे में सोच सकते हैं, जब आपने परीक्षा का अनुभव किया लेकिन हार नहीं मानी? आत्मा ने विरोध करने में आपकी कैसे मदद की?
3. यह देखते हुए कि मसीह ने पाप को पराजित किया है और हम उसी में जीवित किए गए हैं (रोम. 7:15-25), अपनी दुष्टता और पाप के साथ चल रही लड़ाई के बारे में आपकी जागरूकता किस प्रकार उसके अनुग्रह के लिए आपकी प्रशंसा को गहरा करती है?
4. पाप के खिलाफ अपनी प्रतिदिन की लड़ाई में आत्मा पर भरोसा करने के लिए आप कैसे प्रेरित होते हैं?

3

अंगीकार और मन फिराव

पिछले अध्याय की एक सामान्य प्रतिक्रिया, विशेष रूप से समलैंगिक इच्छा और आकर्षण पर बातचीत में, यह है कि अव्यवस्थित इच्छाओं को अनावश्यक रूप से पाप के रूप में देखने से विश्वासी पर निंदा और अपराधबोध का ढेर लग जाता है। यदि अव्यवस्थित आंतरिक इच्छाएँ पाप हैं, तो निश्चित रूप से इसके परिणाम यह नहीं होगा कि इस पाप को लगातार अंगीकार करने की आवश्यकता होगी और कभी भी पूरी तरह से 'परमेश्वर के साथ सही' नहीं हो पाएँगे?

जबकि यह आपत्ति अच्छी मनसा से उठाई है, अक्सर हतोत्साहित मसीहियों की देखभाल करने की इच्छा से प्रेरित है, यह पाप, परमेश्वर के अनुग्रह, हमारे पतित स्वभाव, अंगीकार और मन फिराव (और उनके बीच अंतर) को गलत समझती है। यह अंततः असंगत है।

यदि बिना अंगीकार किया गया पाप हमें कभी भी पूरी तरह से 'परमेश्वर के साथ सही' नहीं छोड़ देता है, तो तार्किक रूप से, पाप का अंगीकार हमें उसके साथ सही बनाता है। यह दावा करने के लिए है कि बिना अंगीकार किया हुआ पाप उन पापों को बिना भुगतान किया हुआ छोड़ देता है (अन्यथा हम परमेश्वर के साथ सही होंगे)। यह इन दोनों बातों का इनकार है कि आप केवल मसीह में विश्वास के माध्यम से बचाए गए हैं (यूह. 3:16; प्रेरितों के काम 10:43; गला. 2:16; इफि. 2:8 रोम. 3:28; 5:1) और मसीह के बलिदान की एक-ही-बार-में-सभी-के-लिए वाला पहलू (यूह. 19:30; इब्रा. 7:27; 9:26; 10:10, 14)। जैसा कि हम देखते हैं, अंगीकार, विश्वासियों के रूप में हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन यह आपका उद्धार नहीं करता है। मसीह में, आपके सभी पाप (अतीत, वर्तमान और भविष्य) पूरी तरह से क्षमा किए गए हैं (इफि. 1:7; कुलु. 2:13; इब्रा. 8:12)। जैसा कि रिचर्ड सिम्स ने बहुत अच्छे से कहा था, "जितना हम में पाप है, उससे कहीं अधिक दया मसीह में है।"

अगर हम परमेश्वर के साथ खुद को सही बनाने के लिए अपने पाप को अंगीकार नहीं करते हैं, तो हम पाप का अंगीकार क्यों करते हैं? अंगीकार क्या है? इसका मन फिराव से क्या संबंध है?

अंगीकार क्या है?

पाप का अंगीकार एक विशिष्ट पाप को पहचानने, उसके लिए खेद व्यक्त करने, इसके लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी लेने और इसे परमेश्वर के सामने मान लेने (कभी-कभी दूसरों के सामने भी) का कार्य है।

पाप अंगीकार करना पाप के बारे में एक सही दृष्टिकोण विकसित करता है। हम पाप को उसी रूप में देखते हैं, जैसे परमेश्वर इसे देखता है, इसके खिलाफ उसके निर्णय को सही मानते हैं। हम इस बात से सहमत हैं कि हमारा पाप वास्तविक, दुष्टता-पूर्ण है, और उससे लड़ना और खत्म करना आवश्यक है। हम ऐसा तब करते हैं, जब हम अपने सभी विचारों और इच्छाओं, कार्यों और शब्दों के सटीक माप के रूप में अपने हृदयों को प्रकाशमान करने के लिए परमेश्वर के वचन को थाम लेते हैं। पवित्रशास्त्र के माध्यम से हम देखते हैं कि हमारा पाप कितना बुरा है।

जैसे-जैसे हम पाप को सही ढंग से देखते हैं, अंगीकार विनम्रता पैदा करता है। हम स्वीकार करते हैं कि हमने गलत किया है और गलत को कम करके या दोष देने की कोशिश करके अपना मुँह छिपाने का प्रयास नहीं करते हैं। यह केवल 'मुझसे गलती हो गई' से कहीं अधिक है। हम विशिष्ट, ठोस पापों को अंगीकार करते हैं, जब हम उनकी जिम्मेदारी लेते हैं और उसे परमेश्वर के सामने मान लेते हैं कि जो हमने किया है। जो अपने अपराध छिपा रखता है, उसका कार्य सफल नहीं होता (नीति. 28:13अ)। अंगीकार पाप को खुले में लाता है, जहाँ इसे देखा जा सकता है, जैसा कि यह वास्तव में है (यूह. 1:8; 3:19-21; इफि. 5:13; भजन. 32:5)। यह आपके जीवन में पाप से लड़ने का सबसे अच्छा तरीका है और समलैंगिक आकर्षण से निपटने के तरीके को सीखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। क्या आप चाहते हैं कि आप पर शासन करने के लिए पाप बढ़ता रहे? तो इसे छिपा कर रखें। क्या आप इसे खत्म करना चाहते हैं? विनम्रता से परमेश्वर और दूसरों के सामने अपने पापों को अंगीकार करें (याकू. 5:16)।

पाप को प्रकाश में लाने की इच्छा केवल परमेश्वर की ओर से एक उपहार के रूप में आती है। अंगीकार पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से किया जाता है। परमेश्वर की सन्तानों के रूप में, हमें पाप से वैसी ही घृणा होनी चाहिए, जैसी परमेश्वर पाप से घृणा करता है, और अपने जीवन से इसे खत्म करने की इच्छा होनी चाहिए। हम अक्सर इसमें विफल हो जाते हैं। हम अपनी पापपूर्ण इच्छा और परमेश्वर की बातों के लिए अपनी इच्छा के बीच संघर्ष का अनुभव करते हैं (रोम. 7:15-25)। लेकिन, अगर हम मसीह द्वारा छुड़ाए जाते हैं, तो हमारे पास एक नया, आत्मिक रूप से जीवित स्वभाव है, जो परमेश्वर की बातों की इच्छा रखता है। क्योंकि हमारा जीवन परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है, इसलिए हमें अपने पाप को मार डालना चाहिए (कुलु. 3:3, 5)।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अंगीकार हमें मसीह में हमारे महिमामयी उद्धार की याद दिलाता है। जब हम अपने पापों को अंगीकार करते हैं, तो परमेश्वर हमें क्षमा करने और हमें सभी अधर्म से शुद्ध करने का वादा करता है (1 यूह. 1:9; नीति. 28:13ब)। हमें अंगीकार के कारण क्षमा नहीं मिलती है, बल्कि यह उससे गुजरकर मिलती है। यह दिखाता है कि हम वास्तव में मसीह में हैं, क्योंकि हम उस पाप को अंगीकार करते हैं, जिसे पहले ही क्षमा कर दिया गया है। यह साहसपूर्वक मसीह के प्रायश्चित के लहू में पाई जाने वाली क्षमा की घोषणा करता है। हमारे पाप की वास्तविकता हमें उसके बोझ के नीचे कुचल देगी, लेकिन अंगीकार हमें याद दिलाता है कि मसीह में हमारा उद्धार कितना महान है। यह हमें याद दिलाता है कि हम भयानक पापी हैं और फिर भी मसीह ने हमें पाप से छुड़ाया है (1 तीमु. 1:15; रोम. 3:23-24; 2 कुर्रि. 5:21)।

इन सब में, अंगीकार के माध्यम से, हम खोए हुए भेड़ की तरह गलती करने के बाद और भटककर परमेश्वर के पास लौटते हैं। पाप का अंगीकार परमेश्वर के साथ उस सहभागिता को पुनर्स्थापित करता है, जिसे हमने तोड़ दिया था। यह हमारे हृदयों में संगति की भावना को पुनर्स्थापित करता है, भले ही परमेश्वर की स्वीकृति कभी नहीं बदलती है। अंगीकार में, हम मसीह, महान चिकित्सक के पास लौटते हैं, जो हमें चंगा करता है और हमें पुनर्स्थापित करता है (यशा. 53:5; 1 पत. 2:24) इस तरह, अंगीकार मन फिराव का एक मुख्य भाग है।

मन फिराव क्या है?

मन फिराव हमारे पाप को देखने, उससे दुःखी होने, इसे अंगीकार करने और इससे परमेश्वर की ओर मुड़ने का कार्य है। जबकि पाप अंगीकार करना मन फिराव का एक महत्वपूर्ण घटक है, मन फिराव अपने आप में व्यापक है। पाप को देखने और उससे दुःखी होने से, उससे मुड़ जाने से पहले, पाप का अंगीकार आता है। मन फिराव हमारे पाप से और परमेश्वर की ओर 180 डिग्री मुड़ने की पूरी प्रक्रिया है।

मन फिराव में हमारे पापों को देखना शामिल है। हम उस बात के लिए पश्चाताप नहीं कर सकते हैं, जो हम नहीं देखते हैं। हमारे मन धोखेबाज हैं (यिर्म. 17:9) और पाप के लिए बहाना बनाने में खुद को मूर्ख बनाना आसान है। हम जवाबदेही और जिम्मेदारी से बचना चाहते हैं। इसलिए, मन फिराव का आवश्यक पहला कदम हमारे पाप को सही ढंग से देखना है कि वह क्या है।

हमारे पाप को देखने के बाद, मन फिराव में हमारे पाप पर शोक करना शामिल है। केवल गलत काम को पहचानने से कोई फायदा नहीं है। सच्चा मन फिराव एक ईश्वरीय शोक द्वारा पहचाना जाता है (2 कुर्रि. 7:9-11)। न केवल पकड़े जाने के लिए सांसारिक खेद या दुःख, क्योंकि पाप के प्रभाव आपके जीवन में असहज हैं। ईश्वरीय शोक एक दुःख होता है, पाप के होने के कारण से एक वास्तविक दुःख है। जैसे धन्य वचनों में कहा गया है, हम, 'मन में दीन' और 'शोक मनाने वाले' हैं। हम पाप के बोझ को महसूस करते हैं और उसके परिणामों

को परमेश्वर के दृष्टिकोण से देखते हैं। हमें मन से खेदित होना चाहिए, क्योंकि हम अपने पाप को एक पवित्र परमेश्वर के खिलाफ विद्रोह के रूप में पहचानते हैं, जो निंदा के योग्य है। पाप पर शोक अंगीकार करने की गंभीरता में विकसित होता है।

मन फिराव में हमारे पापों को अंगीकार करना शामिल है। पश्चातापी हृदय अपना बचाव करने या बहाना देने की कोशिश नहीं करता है। हम उस पाप से मन नहीं फिरा सकते, जिसे हम छिपाते हैं। इसके बजाय, हम ईमानदारी से स्वीकार करते हैं कि हमने अपने पवित्र और प्रेमपूर्ण पिता को आहत किया है। हम अपनी विफलता को स्वीकार करते हैं, जैसा कि दाऊद ने भजन 51 में किया था। अंगीकार के माध्यम से, हमारी पापपूर्णता की निराशा मसीह की धार्मिकता में आनन्द में बदल जाती है। हम देखते हैं कि हम धन्य हैं, और परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि हुई क्षमा के आश्वासन में हम निश्चित हो जाते हैं। जैसे-जैसे हम मसीह में हमारे प्रति दिखाई गई प्रेममय कृपा को पहचानते हैं, वैसे-वैसे हम अपने पापों को छोड़ने के लिए प्रेरित होते हैं।

मन फिराव में पाप से परमेश्वर की ओर मुड़ना शामिल है। एक हृदय जो सही ढंग से पाप को देखता है, उस पर शोक करता है, और अंगीकार करता है कि वह भी उससे नफरत करेगा (रोम. 12:9)। जब हम पाप से घृणा करते हैं, तो हम उससे दूर भागते हैं। हमारी इच्छा है कि हम परमेश्वर और उसकी आज्ञाओं का पालन करें, न कि उनका उल्लंघन करें। सच्चा मन फिराव स्वीकार करता है कि परमेश्वर की व्यवस्था अच्छी है। यह विश्वासी को प्रत्येक उस बात को खत्म करने के लिए प्रेरित करता है, जो भी इस अच्छी व्यवस्था के विपरीत है। पश्चाताप विश्वासी को परीक्षा से भागने और शैतान को कोई अवसर नहीं देने के लिए प्रेरित करता है (याकू. 4:7 इफि. 4:27)। यदि पाप परमेश्वर से दूर जाना है, तो मन-फिराव परमेश्वर की ओर वापसी है (प्रेरितों. 3:19, यशा. 55:7)। सच्चा मन फिराव फल से पहचाना जाता है जब हम अपने मन फिराव और विश्वास के अनुसार जीते हैं (मत्ती 3:8; इफि. 2:8-10)। मन फिराव का परिणाम यह है कि हम नए सिरे से आज्ञाकारिता और प्रेम के साथ परमेश्वर के पास लौटते हैं। समलैंगिक आकर्षण वाले किसी भी मसीही के लिए यह मोड़ केंद्रीय है, क्योंकि यह हृदय को परमेश्वर की इच्छा के साथ संरेखित करता है।

मन फिराव उड़ाऊ पुल की कहानी में दिखाया गया है (लूका 15:11-32)। उस पुल को अपने पाप की कड़वाहट समझ में आती है। वह उसे कम करने की कोशिश नहीं करता, बल्कि विनम्रता से उसे अंगीकार करता है और अपने पिता के पास लौट जाता है। और पिता अपने बेटे को अपनी बाहों में वापस ले उसका स्वागत करता है, ठीक वैसे ही जैसे परमेश्वर हमारा स्वागत करता है, जब हम उसकी ओर लौटते हैं।

पश्चाताप स्वीकार करता है कि हम केवल पाप करने वाले नहीं हैं, बल्कि स्वभाव से पापी हैं। इसमें हमारे विशिष्ट, ठोस पापों और हमारे गहरे पाप के स्वभाव दोनों को संबोधित करना शामिल है। यह जड़ (मूल पाप) और फल (वास्तविक पाप) दोनों तक पहुँचता है। हम व्यक्तिगत रूप से वास्तविक पापों को अंगीकार करते हैं, मन फिराते

हैं और उन्हें छोड़ देते हैं। हम अपने पाप के स्वभाव के लिए अधिक व्यापक रूप से मन फिराते हैं, जब हम अपने पाप पर विलाप करते हैं, समय के साथ इससे अधिक घृणा करते हैं, और इसे अपने हृदय में से मारने की कोशिश करते हैं। जैसे-जैसे हमें पता चलता है कि हम वास्तव में कितने पापी हैं, तो मन फिराव गहरा होता जाता है। क्योंकि हम मृत्यु तक पाप से कभी नहीं बच पाते हैं, इसलिए हमें हमेशा मन फिराव करने की आवश्यकता होगी। जब हम लगातार मन फिराव करते हैं, तो हम मसीह में परमेश्वर की महिमा को लगातार प्रदर्शित करते रहते हैं। हम उसी में सच्ची सांत्वना पाते हैं।

एक मसीही का जीवन निरंतर मन फिराव का जीवन है। यदि आप एक मसीही हैं, जो समलैंगिक आकर्षण के साथ जूझ रहे हैं, तो आपको मन फिराव के जीवन का एक विशेष बार-बार आने वाला विषय हो सकता है। यह हममें से किसी के लिए भी अलग नहीं है। हम सभी एक या दूसरे पाप के साथ अधिक संघर्ष करते हैं। हम सभी के पास पाप के क्षेत्र होते हैं, जिनसे हम अपना अधिकांश जीवन विशेष रूप से लड़ते हुए बिताते हैं। फिर भी आपको जाने बिना भी, मैं गारंटी दे सकता हूँ कि आप कई अन्य पापों के साथ भी जूझते रहेंगे। दुःख की बात है कि हमारा भ्रष्ट स्वभाव इस तरह अनुमानित है। इस बात का ध्यान रखें कि आप पापपूर्ण इच्छाओं के एक विशेष समूह द्वारा परिभाषित न हों। आप अपने पाप से अधिक हैं। आप एक छुड़ाए गए पापी हैं, जो एक अनहृद्यहकारी परमेश्वर द्वारा बचाए गए हैं। मसीह में, आप अपने पापों से मुक्त हो गए हैं। उसमें आपके सभी पाप क्षमा किए गए हैं। भले ही हमारा ध्यान ज्यादातर हमारे जीवन में पाप के बड़े क्षेत्रों पर हो, लेकिन हमें इसके लिए मन फिराव करना चाहिए और इसके विरुद्ध लड़ना चाहिए।

सच्चा मन फिराव फल से पहचाना जाता है। इसमें पाप से लड़ने और परमेश्वर से प्रेम करने का एक नया संकल्प शामिल है। हम अपने पापों के साथ नहीं खेलते हैं। हम उस पर शारीरिक रूप से कार्यवाही किए बिना जितना संभव हो सके, उसके करीब जाने की कोशिश नहीं करते हैं। पाप एक ऐसी चीज है, जिसे हम करते हैं और जिससे पीड़ित होते हैं; हमें इसे अपनी पहचान के रूप में नहीं अपनाना चाहिए। पापी इच्छाओं को 'निर्मल' नहीं किया जा सकता है या पवित्र साधनों के लिए पुनर्निर्मित नहीं किया जा सकता है। पाप पाप है और केवल पाप हो सकता है। जब हम परमेश्वर के पास भागते हैं और पवित्रता में बढ़ने की कोशिश करते हैं, तो हमें अपनी पापपूर्ण इच्छाओं को मारना चाहिए और उनसे भागना चाहिए। यह मसीही विश्वास और समलैंगिक आकर्षण का व्यावहारिक परिणाम है—पाप से दूर जाने और मसीह की ओर मुड़ने का दैनिक समर्पण, आत्मा में चलने से समलैंगिक आकर्षण को दूर करने का तरीका सीखना।

विचारशील प्रश्न:

1. यह आपत्ति कि लगातार पाप अंगीकार करने की आवश्यकता आपको 'परमेश्वर के साथ कभी भी पूरी तरह से सही नहीं बनाती', सुसमाचार को कैसे विकृत करती है और गलत समझती है?
2. आप किन तरीकों से पाप और अंगीकार के बारे में इसी दृष्टिकोण के लिए दोषी हैं?
3. क्या ऐसे परमेश्वर कि ओर मन फिराव में वापस लौटने का विचार जिसने आपको कभी नहीं छोड़ा, आपके लिए नया है? यह परमेश्वर और आपके पाप दोनों के बारे में आपकी समझ को कैसे बदल सकता है?
4. समलैंगिक इच्छा पर मन फिराव करना वास्तव में कैसा दिखता है? 'पाप को देखना, पाप पर शोक करना, पाप को अंगीकार करना, पाप से दूर होना' जैसी श्रेणियाँ समलैंगिक आकर्षण से निपटने में कैसे मदद कर सकती हैं?

4

पवित्रीकरण

पिछले अध्याय में, हमने पाप से परमेश्वर की ओर मुड़ने की प्रक्रिया के बारे में बात की थी। जब हम लगातार पाप से भागते हैं और पवित्रता का पीछा करते हैं, तो हमारे जीवन को मसीह की समानता में विकास द्वारा पहचाना जाना चाहिए। मसीह कि समानता में इस वृद्धि को आमतौर पर पवित्रीकरण कहा जाता है, और यह समलैंगिक आकर्षण सुसमाचार विषयों को समझने के लिए केंद्रीय है।

पवित्रीकरण क्या है?

पवित्रीकरण अलग किए जाने (पवित्र किए जाने) की प्रक्रिया है, यह हममें मसीह के स्वरूप का नवीकरण है। पूरे पवित्रशास्त्र में, हम इसके बारे में दो तरीकों से बात करते हुए देखते हैं: एक निश्चित कार्य और एक प्रगतिशील प्रक्रिया दोनों के रूप में।

निश्चित

नया नियम में पवित्रीकरण को अक्सर ऐसी चीज के रूप में बताया गया है, जो विश्वासियों के साथ पहले ही हो चुकी है। पौलुस साधारण मसीहियों को लिखता है, जो अभी भी पाप से जूझ रहे हैं, और उन्हें “मसीह यीशु में पवित्र” और “संत” कहता है, जिसका अर्थ है, “पवित्र लोग” (1 कुरिं. 1:2; यह भी देखें इफि. 1:1; 4:12; फिलि. 4:21)। वह उन्हें याद दिलाता है, “तुम धोए गए थे, तुम पवित्र किए गए थे, तुम धर्मी ठहराए गए थे” (1 कुरिं. 6:11)। इब्रानियों में भी इसी प्रकार कहा गया है कि विश्वासियों को “एक बार में सभी के लिए” यीशु के बलिदान के माध्यम से “पवित्र” किया गया है (इब्र. 10:10)। इसका मतलब यह है कि जिस समय कोई व्यक्ति मसीह में अपना विश्वास रखता है, परमेश्वर उन्हें पवित्र घोषित करता है और उन्हें अपने निज करके अलग करता है। मसीह के लिए एक हुए, विश्वासी उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के लाभों में भाग लेते हैं (रोम. 6:3-5; 1 कुरिं. 1:30; इफि. 2:4-6)।

यह कार्य हमारे स्वभाव को बदल देता है, जैसे कि विश्वासी पाप के लिए मर गया है और मसीह में एक नई सृष्टि बन गया है (रोम. 6:2; 2 कुरिं. 5:17)। यह पाप के प्रभुत्व से एक निश्चित विराम का प्रतीक है, जहाँ इस जीवन में इसकी निरंतर उपस्थिति के बावजूद पाप अब हम पर शासन नहीं करता है। परमेश्वर हमें पवित्र घोषित करता है, हमारे भीतर की किसी भी चीज़ के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि हम मसीह के हैं और उसके पूर्ण

कार्य से ढके हुए हैं। यह धर्मी ठहराए जाने से अलग है, जहाँ परमेश्वर अधर्मी धर्मी की घोषणा करता है और पाप के अपराध को दूर करता है (रोम. 4:5)। पवित्रीकरण में, परमेश्वर पाप की शक्ति को हटा देते हैं, हमारे स्वभाव को बदल देता है, ताकि हम धर्मी बन सकें। मसीह में आने के समय सभी के लिए एक बार अलग होने को आम तौर पर 'निश्चित' पवित्रीकरण कहा जाता है और यह पूरे मसीही जीवन में पवित्रता में हमारे सारे विकास की नींव है। यह सत्य मसीही विश्वास और समलैंगिक आकर्षण का आधार है।

प्रगतिशील

मसीह में पवित्र होने का मतलब यह नहीं है कि विश्वासी पहले से ही सिद्ध हैं। हम जो पहले से ही हैं, और जो हमें अभी बनना है, उसके बीच एक तनाव है; मसीही जीवन के लिए एक 'पहले से ही-अभी नहीं'। हम पवित्र हैं और पवित्र किए जा रहे हैं। हमने पुराने स्वरूप को त्याग दिया है और मसीह में नए स्वरूप को धारण किया है (गला. 3:27; कुलु. 3:9-10), और फिर भी हमें "पाप को मार डालना चाहिए" और इसे हमारे शरीर में शासन नहीं करने देना चाहिए (रोम. 6:12)। इसलिए मसीही जीवन विकास द्वारा पहचाना जाता है, क्योंकि हम पाप के खिलाफ लड़ते हैं और मसीह की आज्ञाकारिता में चलना सीखते हैं (रोम. 6:12; कुलु. 1:10)। इस निरंतर परिवर्तन को 'प्रगतिशील' पवित्रीकरण कहा जाता है।

यदि निश्चित पवित्रीकरण यह बताता है कि आप मसीह में पहले से कौन हैं, इस तरह प्रगतिशील पवित्रीकरण यह बताता है कि प्रतिदिन के जीवन में यह सच्चाई कैसे काम करती है। प्रगतिशील पवित्रीकरण आजीवन, आत्मा-की सामर्थ्य से चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके द्वारा विश्वासियों को पाप की शक्ति से लगातार विकास के साथ छुड़ाया जाता है और मसीह कि समानता में नवीनीकृत किया जाता है (इफि. 4:23-24; कुलु. 3:10)।

पवित्रशास्त्र सटीक रूप से पाप के साथ विश्वासी के निरंतर संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें समलैंगिक आकर्षण के साथ संघर्ष करना भी शामिल है। हमारा चल रहा युद्ध मृत्यु का नहीं बल्कि आत्मिक जीवन का संकेत है। लगातार होने वाले पाप हमें मसीह से चिपके रहने और उस पर भरोसा करने के लिए मजबूर करते हैं। वे हमारे मन में स्वर्ग की चाह को बढ़ाते हैं, जब कोई पाप नहीं रहेगा। वे हमें विनम्र करते हैं, हमें मन फिराव में लाते हैं, और हमें क्रूस पर चढ़ाए गए मसीह पर निर्भर रहने के लिए मजबूर करते हैं। लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि हमारे पाप को अंततः पराजित कर दिया गया है। परमेश्वर परीक्षा को सहने के लिए पर्याप्त अनुग्रह प्रदान करता है (1 कुरिं. 10:13)। ताकि विश्वासियों को अब पापी इच्छाओं के गुलाम न बन जाएँ, बल्कि उनका विरोध करने और उन्हें तेजी से दूर करने के लिए उन्हें सामर्थ्य दी गई है। पाप पर प्रगतिशील विजय वास्तविक है: इच्छाओं को कमजोर किया जा सकता है, उन्हें मारा जा सकता है, और कुछ मामलों में पूरी तरह से काबू पा लिया जा सकता है, क्योंकि आत्मा हमें आंतरिक रूप से नया बनाता है। प्रतिदिन का मन फिराव पवित्रीकरण के लिए केंद्रीय स्थान रखता है। पाप से मुड़ने के चल रहे अभ्यास के माध्यम से हमारा नया मनुष्यत्व

नया और दृढ़ होता है। हमें इस संसार के अनुरूप नहीं होना है, बल्कि हमारे मन के नए हो जाने से परिवर्तित होना है (रोम. 12:2)। परमेश्वर ने जो शुरू किया है, वह उसे निश्चित रूप से पूरा करेगा, जब तक हम मसीह की वापसी तक पवित्र बने रहेंगे (फिलि. 1:6; 1 थिस्स. 5:23)।

निश्चित पवित्रीकरण की वास्तविकता का अर्थ है कि समलैंगिक आकर्षण के साथ आपके वर्तमान संघर्षों की परवाह किए बिना, आप पापपूर्ण इच्छाओं के साथ कैसे संघर्ष करते हैं, आप पवित्र हैं। जैसे मसीह पवित्र है, वैसे ही परमेश्वर आपको पवित्र समझता है। परमेश्वर ने न केवल आपको अपराध और पाप की निंदा से मुक्त घोषित किया है, बल्कि आपको अपने पवित्र लोगों में से एक घोषित किया है। यही आपकी मौलिक पहचान है।

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि प्रगतिशील पवित्रीकरण उतार-चढ़ाव के साथ एक आजीवन यात्रा है। यह हमारे पाप के लिए बहाना नहीं है, बल्कि हमें खुद को वापस खड़ा करने और लड़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करता है, जब हम अपनी इच्छाओं के आगे झुक जाते हैं। और समलैंगिक पाप ऐसा नहीं ही कि उससे बच न जा सके। 1 कुरिन्थियों 6 में, पौलुस वर्णन करता है कि कैसे “अधर्मी परमेश्वर के राज्य के अधिकारी नहीं होंगे” (वचन 9) इसमें “यौन दुराचारी” और “समलैंगिकता का अभ्यास करने वाले पुरुष” शामिल हैं (वचन 10) और फिर भी, अगला वचन घोषित करता है “और तुम में से कितने ऐसे ही थे, परन्तु तुम प्रभु यीशु मसीह के नाम से और हमारे परमेश्वर के आत्मा से धोए गए और पवित्र हुए और धर्मी ठहरे” (वचन 11)। यह बाइबल में समलैंगिक आकर्षण के बारे में एक प्रमुख अंश है। यह कैसी अद्भुत खबर है! जबकि इच्छाएँ बनी रह सकती हैं, हम अपने पापों से मुक्त हो गए हैं। यदि आप सक्रिय रूप से समलैंगिक जीवन शैली से बाहर आए हैं, तो यह अब आपको परिभाषित नहीं करता है। आप ऐसे ही थे, लेकिन आप धोए गए और पवित्र किए गए। जीवन बदलने वाले उसके अनुग्रह के लिए परमेश्वर की स्तुति करें।

हालाँकि हमें इस जीवन में किसी एक पाप पर पूर्ण विजय का वादा नहीं किया गया है, इसका मतलब यह नहीं है कि स्वतंत्रता संभव नहीं है। जबकि एक मसीही के रूप में समलैंगिक आकर्षण से जुड़ा रहे व्यक्ति के लिए विषम-लैंगिकता को प्राप्त करना लक्ष्य नहीं है, पापपूर्ण इच्छाएँ एक अपरिवर्तनीय वास्तविकता नहीं हैं। संसार इसे सिखा सकता है—अक्सर इसे निश्चित आनुवंशिक यौन आकर्षण या एक स्थायी समान लिंग आकर्षण विकार के रूप में तैयार करता है—लेकिन यह पवित्रशास्त्र से बाहर की बात है। पवित्रशास्त्र आपको बताता है कि मसीह में, आप पाप के शासन से स्वतंत्र हैं, और समलैंगिक आकर्षण के लिए वास्तविक मसीही सहायता प्रदान करता है। हम वास्तव में एक नए स्वभाव के साथ परिवर्तित हो सकते हैं। इस परिवर्तन को जबरदस्ती से या मजबूरी से नहीं किया जा सकता है, लेकिन यह वास्तव में होता है। कुछ लोग अपनी इच्छाओं पर जीत को

विवाह करने में सक्षम होने के पड़ाव तक देखते हैं, जो पहले समलैंगिक इच्छा द्वारा पहचाने जाते थे। कई ऐसे हैं, जो ऐसा नहीं करते हैं।

विषम-लैंगिकता प्राप्त करना पवित्रीकरण का लक्ष्य नहीं है। हालाँकि विषम-लैंगिक इच्छाएँ उनके बनाए गए उद्देश्य में 'स्वाभाविक', समान रूप से अव्यवस्थित हो सकती हैं। पवित्रीकरण का उद्देश्य मसीह की समानता में बढ़ना है। हो सकता है कि हम इस जीवन में पाप से स्वतंत्र न हों, लेकिन हमें समय के साथ कुछ विकास देखना चाहिए, क्योंकि हम आत्मा की सामर्थ्य में अपने पाप को मार देते हैं। एक दिन हम पाप से मुक्त हो जाएंगे। यह इस बात की आशा प्रदान करता है कि अंतिम अर्थों में समलैंगिक आकर्षण को कैसे दूर किया जाए।

इससे हमें अपने पाप को, उसकी शुरुआत से ही, हमारे दिल में इच्छाओं के रूप में, मार देने में निर्दयी बनना चाहिए। पाप आपके विनाश से कम कुछ नहीं चाहता है। जैसा कि जॉन ओवेन विख्यात रूप से चेतावनी देते हैं, "हमेशा पाप को मारते रहें अन्यथा यह आपको मार देगा।" अफसोस की बात है कि कई मसीही अगुवों का तर्क है कि समलैंगिक इच्छाएँ तब तक पापपूर्ण नहीं हैं, जब तक कि उन पर कार्यवाही नहीं की जाती है। यह विश्वासियों को समलैंगिक आकर्षण के बारे में गुमराह करता है और उनके दिलों में आत्मा के अपराध-बोध के काम को कम करता है। जबकि हमें इस बात का बहुत ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ परमेश्वर का वचन बाँधता नहीं है, वहाँ हमें विवेक को न बाँधें, वहाँ हमें इस बात का भी बहुत ध्यान रखना चाहिए कि हम उन चीजों को बढ़ावा न दें और उनका समर्थन न करें, जिन्हें परमेश्वर का वचन स्पष्ट रूप से पाप बताता है।

विचारशील प्रश्न:

1. निश्चित पवित्रीकरण को समझना मसीह में अपने आप को देखने के तरीके को कैसे आकार देता है? इसके आलोक में आप चल रहे पाप या पापपूर्ण इच्छाओं को कैसे देखते हैं?
2. प्रगतिशील पवित्रीकरण के आलोक में वर्तमान में आप किन विशिष्ट पापों को 'मार देने के लिए' कह सकते हैं?
3. ऐसे कौन से पाप हैं, जिन्हें आपको मार देने की आवश्यकता है, जिन पर आपने कम ध्यान दिया है?
4. आत्मा के फल को देखते हुए (गला. 5:22-23), आप अपने जीवन में परमेश्वर के पवित्रीकरण कार्य का प्रमाण कहाँ देखते हैं?
5. यह वादा कि परमेश्वर ने आप में जो काम शुरू किया है, वह पूरा करेगा (फिलि. 1:6), आपको पाप से लड़ते रहने के लिए कैसे हिम्मत देता है, तब भी जब प्रगति धीमी या एक जैसी न लगे? असफलता के बाद इस आशा को आपकी प्रतिक्रिया को कैसे आकार देना चाहिए?

5

स्थानीय कलीसिया में समुदाय

पाप से लड़ने का कार्य कभी भी अकेले करने के लिए नहीं था। हम अपनी शक्ति या ज्ञान से पाप से लड़ने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं हैं। परमेश्वर ने स्थानीय कलीसिया को विश्वासियों के एक समर्पित समुदाय के रूप में तैयार किया है, जो मसीही जीवन में एक साथ चलते हैं, एक दूसरे को पाप का विरोध करने, पवित्रता में बढ़ने और अंत तक विश्वास में बने रहने में मदद करते हैं। एक ही जैसे लिंग की ओर -आकर्षित मसीही के लिए जो इच्छाओं के साथ संघर्ष करता है, स्थानीय कलीसिया एक बाहरी सहारा नहीं है।

व्यवस्थित समाज मायने रखता है: एक कलीसिया जो पाप और प्रेम को गंभीरता से लेती है

यदि कलीसिया अपने लोगों में पवित्रता बनाए रखने के लिए परमेश्वर का बनाया हुआ माहौल है, तो कलीसिया को कैसे व्यवस्थित और चलाया जाता है, यह बहुत मायने रखता है। कलीसिया का ढाँचा (उसकी शासन व्यवस्था) निश्चित रूप से उसकी संस्कृति और उसके लोगों के रहने के तरीके को बनाता है। कलीसियाई सदस्यता, अनुशासन और अधिकार को कैसे समझती है, यह बताती है कि वह पाप और उद्धार के बारे में असल में क्या मानती है। यह संरचना अक्सर उन लोगों के लिए गुमनाम नायक के समान होता है, जो पूछते हैं कि एक विश्वासयोग्य समुदाय में समलैंगिक आकर्षण से कैसे निपटा जाए।

सबसे पहले, अर्थपूर्ण कलीसिया सदस्यता आपसी जिम्मेदारी पैदा करती है। सदस्यता उपभोक्ता की पसंद नहीं है, यह एक ऐसी वाचा है, जिसमें विश्वासी एक-दूसरे के आत्मिक विकास के लिए समर्पित होते हैं, जिसमें एक-दूसरे को परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति जवाबदेह ठहराना भी शामिल है। सदस्यता में, एक व्यक्ति पूरी कलीसिया के लिए समर्पित होता है, और पूरी कलीसिया व्यक्ति के लिए समर्पित होती है। कलीसिया की सदस्यता का अर्थ दूसरों को अपने जीवन में बोलने के लिए आमंत्रित करना है, भले ही वह भाषण असहज हो (इफि. 4:16-17)। सदस्य पारदर्शी जीवन जीने, प्रेम से सच बोलने और एक-दूसरे से इतना प्रेम करने के लिए समर्पित हैं कि वे अपने मसीही जीवन में एक-दूसरे को जवाबदेह ठहरा सकें। कलीसिया की सदस्यता का मतलब कुछ ऐसा होना चाहिए, जब हम एक-दूसरे को शिष्य बनाते हैं, एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं, एक-दूसरे की देखभाल करते हैं और एक-दूसरे के साथ खुले तौर पर रहते हैं। समलैंगिक आकर्षण को संबोधित करते समय इस तरह का खुलापन आवश्यक है।

दूसरा, कलीसिया का अनुशासन पाप को गंभीरता से लेता है। कलीसिया का अनुशासन अपने सदस्यों के जीवन में पाप का सामना करने की प्रक्रिया है, चाहे एक निजी चेतावनी के रूप में या सदस्यता से औपचारिक रूप से हटाने के रूप में, पुनर्स्थापना के लक्ष्य के साथ। कलीसिया का अनुशासन मसीह को प्रतिबिंबित करता है और ऊँचा करता है, क्योंकि यह उनके नाम और महिमा की रक्षा करता है। एक ऐसा संसार में जो पाप को कम करता है और व्यक्तिगत इच्छाओं को पविल मानता है, बाइबल का कलीसिया का अनुशासन एक विरोधी सांस्कृतिक गवाह के रूप में खड़ा है। पविलशास्त्र सिखाता है कि निरंतर किए जाने वाले, मन फिराव के बिना पाप खतरनाक है, न केवल आपके लिए बल्कि पूरी कलीसिया कि देह के लिए (1 कुरिं. 5:6-8)। भले ही पाप का सामना करना मुश्किल हो, यह परमेश्वर के द्वारा दी गई आज्ञा है (मत्ती 18:15-20)। कलीसिया का अनुशासन हमेशा विश्वासियों को मन फिराव में पुनर्स्थापित करने के लक्ष्य के साथ होता है (1 कुरिं. 5:4; 2 कुरिं. 2:5-8; गला. 6:1)।

कलीसिया का अनुशासन अर्थपूर्ण सदस्यता को समर्पण के साथ पालन करता है। हम एक-दूसरे के आत्मिक कल्याण के लिए समर्पित होने का दावा कैसे कर सकते हैं, यदि हम कठोर सत्य का पालन करने और बोलने के लिए तैयार नहीं हैं? कलीसिया के अनुशासन के माध्यम से, हम एक दूसरे को पाप के प्रलोभन से बचाते हैं। हम एक-दूसरे को पाप के खतरों की याद दिलाते हैं और अपनी लड़ाई में एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं। समलैंगिक आकर्षण से जूझ रहे किसी व्यक्ति के लिए, यह सुरक्षा शलुता का कार्य नहीं है, बल्कि गहरे प्रेम का कार्य है, जो उन्हें मसीही विश्वास और समलैंगिक आकर्षण संघर्ष में मसीह के साथ बाँधकर रखता है।

चलेपन की एक संस्कृति

चलेपन की संस्कृति एक स्वस्थ कलीसिया का भाग है। अर्थपूर्ण सदस्यता से प्रेरित, चलापन साथी मसीहियों के साथ चलने का कार्य है, क्योंकि हम एक-दूसरे को विश्वास में परिपक्वता तक लाने की कोशिश करते हैं (इफि. 4:14-16; कुलु. 1:28; रोम. 15:1-2; 1 थिस्स. 5:11)। कार्यक्रम और संरचनाएँ इसे नहीं बना सकती हैं, और न ही समलैंगिक आकर्षण के बारे में केवल नीतिगत बयान इसे बना सकते हैं; जो आवश्यक है, वह जानबूझकर बनाए गए रिश्तों के द्वारा साझे जीवन को आकार देना है।

वास्तव में खुद को जानने देने की अनुमति देना चलेपन का केंद्र है। पाप गुप्त जीवन में पनपता है। विकास के लिए इसे प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। पविलशास्त्र बार-बार आत्मिक स्वास्थ्य को एक साथ प्रकाश में चलने के साथ जोड़ता है, जब हम पाप अंगीकार करते हैं, एक दूसरे के लिए प्रार्थना करते हैं, और एक दूसरे के बोझ और दुःखों को उठाते हैं (याकू. 5:16; गला. 6:2)। इसका मतलब है कि हमें अन्य मसीहियों के साथ सच्चा खुलापन रखना चाहिए। यह आपकी व्यक्तिगत संबंधपरक क्षमताओं के आधार पर केवल एक या दो लोग हो सकते हैं, या कई हो सकते हैं। लेकिन पविलशास्त्र स्पष्ट है कि मसीही विश्वास एक-अकेला होकर चलने

वाला विश्वास नहीं है। चलेपन की एक संस्कृति विश्वासयोग्य जवाबदेही को प्रोत्साहित करती है, जहाँ मसीही एक-दूसरे के साथ खुले हो सकते हैं और जब हम संघर्ष कर रहे हों तो विनम्रता से स्वीकार कर सकते हैं। एक अनुशासित कलीसिया यह स्पष्ट करती है कि सभी मसीही पाप के साथ युद्ध में लगे हुए हैं। समान लिंग आकर्षण के साथ संघर्ष करने वालों को एक विशेष श्रेणी का सामना नहीं करना पड़ता है, जो किसी को संगति से अयोग्य ठहराती है; उनकी इच्छाएँ पाप के साथ मानव संघर्ष का एक विशेष प्रकटीकरण हैं।

चलेपन में प्रोत्साहन और मजबूत करना शामिल है। कोई भी केवल डांट फटकार से पनपता और बढ़ता नहीं है। हमें सुसमाचार के याद दिलाने की आवश्यकता है: हमें जो अनुग्रह प्राप्त हुआ है, हमारे पाप परमेश्वर द्वारा क्षमा किए गए हैं; यह पुनरुत्थान की आशा है। एक मजबूत चलेपन की संस्कृति हमारी आँखों को उस पर लगाए रखती है, जो अभी आने वाला है, क्योंकि हम मसीह की वापसी और पाप के समाप्त होने के लिए तरसते हैं। कलीसिया समुदाय में, हम अधिक परिपक्व संतों से सीख सकते हैं, जिन्होंने दशकों की आज्ञाकारिता, पीड़ा, मन फिराव और आनंद के माध्यम से सीखा है। वे हमें लड़ाई जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और पाप पर विजय पाने में आत्मा की सामर्थ्य का प्रमाण हैं।

चलेपन के लिए भी मित्रता की आवश्यकता होती है। कामुकता और प्रेमी-प्रेमिका के प्रेम से ग्रस्त संसार में, मसीही मित्रता के दर्शन को फिर से प्राप्त किया जाना चाहिए। पवित्रशास्त्र में मित्रता को एक गहरी अच्छाई के रूप में दिखाया गया है, जो अत्याधिक आत्मिक और भावनात्मक बोझ उठाने में सक्षम है। वे मसीही जो एक उच्च आज्ञाकारिता, विशेष रूप से आजीवन अविवाहित रहना -कई समलैंगिक आकर्षण मसीही विश्वासियों के लिए एक वास्तविकता-मित्रता एक सात्वता भरा प्रतिफल नहीं है। यह प्रेम, आनन्द और अपनेपन का परमेश्वर द्वारा दिया गया साधन है। चलेपन की एक कलीसिया संस्कृति ऐसी मित्रता विकसित करने में जानबूझकर कदम उठाने वाली होनी चाहिए, जो वास्तविक, त्यागपूर्ण और स्थायी हो। इसमें, हम स्वर्ग का एक पूर्वावलोकन प्रदान करते हैं, जहाँ हमें विवाह में नहीं दिया जाएगा, बल्कि हम मेम्ब्रे के साथ उसकी दुल्हन, कलीसिया के रूप में होंगे (प्रका. 19:6-9)।

जोर डालने वाला समुदाय

कलीसियाई समुदाय केवल रचनात्मक नहीं है, यह सुसमाचार फैलाने वाला है। यीशु ने सिखाया कि मसीहियों के बीच प्रेम देखने वाले संसार के लिए एक गवाही होगा (यूह. 13:34-35)। सत्य, कृपा और त्याग प्रेम से पहचान जाने वाला एक समुदाय एक ऐसी संस्कृति में गहरा आकर्षण का केंद्र है, जो तेजी से टूट रही है। अकेलेपन और खाली खोज से भरे इस संसार में, कलीसिया का वास्तविक समुदाय अलग है। परमेश्वर की परिकल्पना पर आधारित एक कलीसिया पहचान के भ्रम से भरे संसार को स्थिरता देती है और एक अनूठी आशा प्रदान करती है, जो कहीं और नहीं मिलती है। प्रेम केवल पुष्टि नहीं है। यह किसी व्यक्ति की भलाई के

लिए स्वेच्छा से किया गया एक समर्पण है और कलीसिया का दृढ़ विश्वास और करुणा का मेल इसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है। जब अविश्वासी अपने विपरीत मसीहियों को देखते हैं कि स्पष्ट रूप से अलौकिक तरीकों से वे दूसरों से प्रेम करते हैं, एकता में होते हैं, जब वे एक-दूसरे का बोझ उठाते हैं, एक-दूसरे का भरण-पोषण करते हैं, एक-दूसरे को क्षमा करते हैं, और आज्ञाकारिता में एक साथ लगे रहते हैं, तो वे सुसमाचार की सच्चाई के लिए जीवित प्रमाण देखते हैं।

हममें से प्रत्येक के भीतर अपना होने और प्रेम पाने की इच्छा स्वाभाविक रूप से यौन नहीं है। यह मूल रूप से मानवीय है, क्योंकि हम परमेश्वर द्वारा जाने और प्रेम किए जाने की गहरी इच्छा के साथ बनाए गए हैं। हमारी सबसे गहरी ज़रूरत यौन पूर्ति के माध्यम से नहीं बल्कि परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप के माध्यम से पूरी होती है। कलीसिया को इस सांस्कृतिक धारणा को मजबूत नहीं करने के लिए सावधान रहना चाहिए कि यौन अंतरंगता मानवीय संबंध का प्राथमिक रूप है। समलैंगिक इच्छाओं को अमूर्त आत्मिक गतिविधि में 'निर्मल' नहीं किया जा सकता है और 'चुने हुए लोग' समलैंगिक साझेदारी के लिए एक पापरहित खामी नहीं हैं। यह परिप्रेक्ष्य सबसे महत्वपूर्ण समलैंगिक आकर्षण सुसमाचार विषयों में से एक है: संबंध यौन अभिव्यक्ति पर निर्भर नहीं है। यह मसीह के साथ मिलन पर आधारित है। जो लोग मसीह की खातिर यौन संबंध छोड़ देते हैं, उन्हें कम जीवन की सजा नहीं दी जाती है। जैसे ही वे खुद को नकारते हैं और अपना क्रूस उठाते हैं, वे जीवन को पूरी तरह से पाते हैं (मत्ती 16:24-27) आप प्रेम को नहीं खो रहे हैं, आप इसके एक बहुत गहरे, असीम रूप से लंबे समय तक चलने वाले प्रेम के लिए समर्पित हैं।

मन फिराव और क्षमा के रूप में स्थानीय कलीसिया सुसमाचार का एक जीवित प्रदर्शन है। इसका जीवन एक साथ इस बात की गवाही देना चाहिए कि मसीह पाप और आज्ञाकारिता से बेहतर है, जबकि महंगा है, फिर भी इसमें पैसा वसूल हो जाता है। कलीसिया इस जीवन में परिपूर्ण नहीं है, लेकिन यह एक ऐसी जगह है, जहाँ अपूर्ण लोगों का स्वागत किया जाता है, पापियों को बदल दिया जाता है, और संतों को महिमा के लिए बनाया जाता है। कलीसियाई समुदाय में, आप कभी अकेले नहीं चलेंगे, और समलैंगिक आकर्षण के लिए मसीही सहायता का सबसे अच्छा तरीका पाएँगे।

विचारशील प्रश्न:

1. पाप से लड़ना ऐसा कुछ क्यों नहीं है, जिसे परमेश्वर चाहता है कि हम अकेले करें? पवित्रता के लिए अपनी लड़ाई में आपने मसीही समुदाय के साथ किस तरह से अच्छा या बुरा अनुभव किया है?
2. दूसरे मसीहियों के द्वारा आपको सच में जाना जाए, यह आपके लिए क्यों मुश्किल है? क्या आप किसी अगुवे के साथ कुछ ऐसा साझा कर सकते हैं, जिससे उन्हें आपकी बेहतर सेवा करने में मदद मिल सके?
3. आप कलीसिया में सच्ची, ईश्वरीय मित्रता बनाने के लिए कैसे कोशिश कर सकते हैं?



जैकब हारग्रेव अभी कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में अपनी Ph.D. कर रहे हैं। अपनी पत्नी और बच्चों के साथ कैम्ब्रिज जाने से पहले, उन्होंने वाशिंगटन, D.C. में कैपिटल हिल बैप्टिस्ट चर्च में सहायक पासबान के तौर पर काम किया है।

